2 बूढ़ी काकी

प्रेमचन्द

(जन्म : सन् 1880 ई., निधन : सन् 1936 ई.)

हिन्दी के उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द का जन्म उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था । उनका मूल नाम धनपतराय था। शिक्षा काल में ही उन्होंने अंग्रेजी के साथ उर्दू का भी अध्ययन किया था । प्रारंभ में वे कुछ वर्षों तक स्कूल में रहे, बाद में शिक्षा विभाग में सब-डिप्टी इंस्पेक्टर रहे । स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्होंने नौकरी छोड़ दी और वे स्वतंत्र लेखन की ओर मुड़े । वे हिन्दी ही नहीं बल्कि समग्र भारतीय साहित्य के महान व्यक्तित्व हैं ।

अपनी आवाज जनता तक पहुँचाने के लिए उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ और नाटक लिखे । उन्होंने अन्य भाषाओं से अनुवाद किए, निबंध लिखे तथा बालोपयोगी साहित्य की रचना भी की । गबन, वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गोदान, मंगलसूत्र (अपूर्ण) उनके उपन्यास हैं । 'मानसरोवर' आठ भागों में उनकी लगभग तीन सौ कहानियाँ संग्रहित हैं । प्रेम की वेदी, कर्बला और संग्राम उनके नाटक हैं । कुछ विचार, कलम और तलवार और त्याग आदि उनके निबंध संकलन हैं ।

'बूढ़ी काकी' में प्रेमचन्द ने ऐसे दयनीय वृद्धों की अवस्था की ओर हमारा ध्यान खींचा है, जिन्हें उपेक्षा मिलती है और जो जीवन के हर क्षण का आनंदपूर्वक उपभोग करना चाहते हैं । यह मूल कहानी का संक्षिप्त रूप है ।

बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है । बूढ़ी काकी में जीभ के स्वाद के सिवा न और कोई चेष्टा शेष थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही । समस्त इंद्रियाँ, हाथ और पैर जवाब दे चुके थे । जमीन पर पड़ी रहती और घरवाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता या उसकी मात्रा कम होती अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और न मिलती, तो वे रोने लगती थीं । उनका रोना-सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़कर रोती थीं ।

उनके पति को स्वर्ग सिधारे बहुत वक्त हो चुका था । बेटे तरुण हो-होकर चल बसे थे । अब एक भतीजे के सिवाए और कोई न था । उसी भतीजे के नाम उन्होंने अपनी सारी संपत्ति लिख दी । बुद्धिराम ने सारी संपत्ति लिखाते समय खूब लंबे-चौड़े वादे किए, किंतु वे सब वादे केवल कुली डिपो के दलालों के दिखाए हुए सब्जबाग थे । यद्यपि उस संपत्ति की वार्षिक आय कम न थी तथापि बूढ़ी काकी को पेट भर भोजन भी कठिनाई से मिलता था ।

लड़कों का बूढ़ों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है और फिर जब माता-पिता का यह रंग देखते तो वे बूढ़ी काकी को और सताया करते । कोई चुटकी काटकर भागता, कोई उन पर पानी कुल्ली कर देता । काकी चीख मार कर रोती, परंतु यह बात प्रसिद्ध थी कि वे केवल खाने के लिए रोती हैं, अतएव उनके संताप और आर्तनाद पर कोई ध्यान नहीं देता था ।

संपूर्ण परिवार में यदि काकी से किसी का अनुराग था, तो वह बुद्धिराम की छोटी लड़की लाडली थी । लाडली अपने दोनों भाइयों के डर से अपने हिस्से की मिठाई या चबैना बूढ़ी काकी के पास बैठकर खाया करती थी । यही उसका रक्षागार था और यद्यपि काकी की शरण उनकी लोलुपता के कारण महँगी पड़ती थी, तथापि भाइयों के अन्याय की तुलना में कहीं सुलभ थी। इस स्वार्थानुकूलता ने उन दोनों में सहानुभूति का आरोपण कर दिया था ।

रात का समय था । बुद्धिराम के द्वार पर शहनाई बज रही थी और गाँव के बच्चों का झुंड विस्मयपूर्ण नेत्रों से गाने का रसास्वाद कर रहा था ।

आज बुद्धिराम के बड़े लड़के सुखराम का तिलक आया है । यह उसी का उत्सव है । घर के भीतर स्त्रियाँ गा रही थीं और रूपा मेहमानों के लिए भोजन के प्रबंध में व्यस्त थी । भट्ठियों पर कड़ाह चढ़े थे । एक में पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ निकल रही थीं । एक बड़े पतीले में मसालेदार सब्जी पक रही थी । घी और मसालों की सुगंध चारों ओर फैली हुई थी ।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में बैठी हुई थी । यह सुगंध उन्हें बेचैन कर रही थी । वे मन-ही-मन सोच रही थीं, इतनी देर हो गई कोई भोजन लेकर नहीं आया । मालूम होता है, सब लोग भोजन कर चुके हैं । यह सोचकर उन्हें रोना आया, परंतु अपशकुन के डर से वे रो न सकीं ।

बूढ़ी काकी की कल्पना में पूड़ियों की तसवीर नाचने लगी । खूब लाल-लाल, फूली-फूली, नरम-नरम होंगी । कचौड़ियों में अजवाइन और इलायची की महक आ रही होगी । एक पूड़ी मिलती तो जरा हाथ लेकर देखती । क्यों न चलकर कड़ाह के सामने ही बैठूँ । इस प्रकार निर्णय करके बूढ़ी काकी उकड़ूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई बड़ी कठिनाई से चौखट से उतरी और धीरे-धीरे रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठीं । यहाँ आने पर उन्हें उतना ही धैर्य हुआ जितना भूखे कुत्ते को खानेवाले के सम्मुख बैठने में होता है ।

बुद्धिराम की पत्नी रूपा उस समय कार्य-भार से परेशान हो रही थी । कभी इस कमरे में जाती, कभी उस कमरे में, कभी कड़ाह के पास आती, कभी भंडार में जाती । बेचारी अकेली दौड़ते-दौड़ते व्याकुल हो रही थी, झुँझलाती थी, कुढ़ती थी, परंतु क्रोध प्रकट करने का अवसर न पाती थी । इस अवस्था में उसने बूढ़ी काकी को कड़ाह के पास बैठे देखा तो जल उठी । क्रोध न रुक सका । जिस प्रकार मेंढक केंचुए पर झपटता है, उसी प्रकार वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली, ''ऐसे पेट में आग लगे, पेट है या भाड़ ? कोठरी में बैठते हुए क्या दम घुटता था ? अभी मेहमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा, तब तक धैर्य न हो सका ?''

बूढ़ी काकी ने सिर उठाया; न रोईं न बोली । चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गई । भोजन तैयार हो गया है । आँगन में पत्तलें पड़ गईं, मेहमान खाने लगे ।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में जाकर पश्चाताप कर रही थीं कि मैं कहाँ चली गई । उन्हें रूपा पर क्रोध नहीं था । अपनी जल्दबाजी पर दु:ख था । सच ही तो है, जब तक मेहमान लोग भोजन न कर लेंगे, घरवाले कैसे खाएँगे । मुझसे इतनी देर भी न रहा गया । अब जब तक कोई बुलाने न आएगा, न जाऊँगी ।

मन-ही-मन इसी प्रकार का विचार कर वह बुलावे का इंतजार करने लगीं । वह मन को बहलाने के लिए लेट गई । धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगीं । उन्हें मालूम हुआ कि मुझे गाते देर हो गई । क्या इतनी देर तक लोग भोजन कर रहे होंगे ? किसी की आवाज नहीं सुनाई देती । अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गए । मुझे कोई बुलाने नहीं आया । रूपा चिढ़ गई है, क्या जाने न बुलाए । बूढ़ी काकी चलने के लिए तैयार हुई । यह विश्वास है कि एक मिनट में पूड़ियाँ और मसालेदार सब्ज़ियाँ सामने आएँगी, उनकी स्वादेंद्रियाँ गुदगुदाने लगीं । उन्होंने मन में तरह-तरह के मंसूबे बाँधे-पहले सब्जी से पूड़ियाँ खाऊँगी, फिर दही और शक्कर से, कचौड़ियाँ रायते के साथ मज़ेदार मालूम होंगी । चाहे कोई बुरा माने चाहे भला, मैं तो माँग-माँगकर खाऊँगी । यही न लोग कहेंगे कि इन्हें विचार नहीं । कहा करें, इतने दिन के बाद पूड़ियाँ मिल रही हैं तो मुँह जूठा करके थोड़े ही उठ जाऊँगी ।

वह उकड़ूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई आँगन में आईं । परंतु हाय दुर्भाग्य ! मेहमान मंडली अभी बैठी हुई थी । कोई खाकर उँगलियाँ चाटता था, कोई तिरछे नेत्रों से देखता था कि और लोग अभी खा रहे हैं या नहीं । इतने में बूढ़ी काकी रेंगती हुई उनके बीच में जा पहुँचीं ।

पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध से तिलमिला गए । लपककर उन्होंने काकी के दोनों हाथ पकड़े और घसीटते हुए लाकर उन्हें अँधेरी कोठरी में धम से पटक दिया ।

मेहमानों ने भोजन किया । घरवालों ने भोजन किया । बाजेवाले, धोबी, नाऊ भी भोजन कर चुके, परंतु बूढ़ी काकी को किसी ने न पूछा । बुद्धिराम और रूपा दोनों ही बूढ़ी काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे । उनके बुढ़ापे पर, दीनता पर किसी को करुणा न आई । अकेली लाडली उनके लिए परेशान हो रही थी ।

लाडली को काकी से अत्यंत प्रेम था । वह झुँझला रही थी कि वे लोग काकी को बहुत-सी पूड़ियाँ क्यों नहीं दे देते? क्या मेहमान सब की सब खा जाएँगे ? और यदि काकी ने मेहमानों के पहले खा लिया तो क्या बिगड़ जाएगा ? वह काकी के पास जाकर उन्हें धैर्य देना चाहती थी परंतु माँ के डर से न जाती थी । उसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ बिलकुल न खाई थीं । उन पूड़ियों को काकी के पास ले जाना चाहती थीं । उसका हृदय अधीर हो रहा था । बूढ़ी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेंगी, पूड़ियाँ देखकर कैसी प्रसन्न होंगी । मुझे खूब प्यार करेंगी ।

रात के ग्यारह बज गए थे । रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी । लाडली की आँखों में नींद न थी । काकी को पूड़ियाँ खिलाने की खुशी उसे सोने न देती थी । जब विश्वास हो गया कि अम्माँ सो रही है, तो वह चुपके से उठी और बूढ़ी काकी की कोठरी की ओर चली ।

बूढ़ी काकी को केवल इतना याद था कि किसी ने मेरे हाथ पकड़ कर घसीटे और फिर ऐसा मालूम हुआ कि जैसे कोई पहाड़ पर उड़ाए लिए जाता है । उनके पैर बार-बार पत्थरों से टकराए तब किसी ने उन्हें पहाड़ पर दे पटका, वे मूर्छित हो गईं ।

जब वे सचेत हुईं तो किसी की जरा भी आहट न मिलती थी । उन्होंने समझा कि सब लोग खा-पीकर सो गए ।

यह विचारकर काकी निराशामय संतोष के साथ लेट गईं । ग्लानि से गला भर-भर आता था, परंतु मेहमानों के डर से रोती न थीं ।

सहसा उनके कानों में आवाज आई, 'काकी उठो; मैं पूड़ियाँ लाई हूँ ।' काकी ने लाडली की बोली पहचानी । चटपट उठ बैठीं । दोनों हाथों से लाडली को टटोला और उसे गोद में बैठा लिया । लाडली ने पूड़ियाँ निकालकर दीं ।

काकी ने पूछा, ''क्या तुम्हारी अम्माँ ने दी हैं ?''

लाडली ने कहा, ''नहीं, यह मेरे हिस्से की हैं ।''

काकी पूड़ियों पर टूट पड़ी । पाँच मिनट में पिटारी खाली हो गई । लाडली ने पूछा, ''काकी पेट भर गया ?''

जैसे थोड़ी-सी वर्षा ठंडक के स्थान पर गरमी पैदा कर देती है, उसी तरह इन थोड़ी पूड़ियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को और उत्तेजित कर दिया था । बोली, ''नहीं बेटी, जाकर अम्माँ से और माँग लाओ ।''

लाडली ने कहा, ''अम्माँ सो गई हैं, जगाऊँगी तो मारेंगी ।''

काकी ने पिटारी को फिर टटोला । उसमें कुछ खुर्चन गिरे थे । उन्हें निकालकर वे खा गईं । बार-बार होंठ चाटती थीं, चटखारें भरती थीं ।

हृदय मसोस रहा था कि और पूड़ियाँ कैसे पाऊँ ? काकी का अधीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया । उचित और अनुचित का विचार जाता रहा । वे कुछ देर तक उस इच्छा को रोकती रहीं । सहसा लाडली से बोली, ''मेरा हाथ पकड़कर वहाँ ले चलो, जहाँ मेहमानों ने बैठकर खाना खाया ।''

लाडली उनका अभिप्राय समझ न सकी । उसने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठे पत्तलों के पास बैठा दिया । काकी पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुनकर खाने लगीं । ओह ! दही कितना स्वादिष्ट था, कचौड़ियाँ कितनी सलोनी, खस्ता कितना सुकोमल । काकी बुद्धिहीन होते हुए भी इतना जानती थीं कि मैं वह काम कर रही हूँ, जो मुझे कदापि न करना चाहिए । मैं दूसरों की जूठी पत्तल चाट रही हूँ । परंतु बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब संपूर्ण इच्छाएँ एक ही केंद्र पर आ लगती हैं । बूढ़ी काकी में यह केंद्र उनकी स्वादेंद्रियाँ थीं ।

ठीक उसी समय रूपा की आँखें खुलीं । उसे मालूम हुआ कि लाडली मेरे पास नहीं है । चौकी, चारपाई के इधर-उधर देखने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पड़ी । उसे वहाँ न पाकर वह उठी तो क्या देखती है कि लाडली जूठे पत्तलों के पास चुपचाप खड़ी है और बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही हैं ।

रूपा का हृदय सन्न हो गया । यह वह दृश्य था जिसे देखकर देखनेवालों के हृदय काँप उठते हैं । ऐसा प्रतीत होता मानों ज़मीन रुक गई, आसमान चक्कर खा रहा है । संसार पर कोई विपत्ति आनेवाली है । रूपा को क्रोध न आया । शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ ? करुणा और भय से उसकी आँखें भर आईं । इस अधर्म के पाप का भागी कौन है ? उसने सच्चे हृदय से गगन-मंडल की ओर हाथ उठा कर कहा, ''परमात्मा, मेरे बच्चों पर दया करो । इस अधर्म का दंड मुझे मत दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जाएगा ।''

रूपा की ओर स्वार्थपरता और अन्याय इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप में कभी न दीख पड़े थे । वह सोचने लगी, ''हाय ! कितनी निर्दय हूँ ? जिसकी संपत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति ! और मेरे कारण ! हे दयामय भगवान ! मुझसे बड़ी भारी गलती हुई है, मुझे क्षमा करो ।''

रूपा ने दिया जलाया, अपने भंडार का द्वार खोला और एक थाली में सारा भोजन सजाकर लिए हुए बूढ़ी काकी की ओर चली । उसने कंठावरुद्ध स्वर में कहा, ''काकी उठो, भोजन कर लो । मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना । परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वे मेरा अपराध क्षमा कर दें ।''

भोले-भाले बच्चों की भाँति, जो मिठाइयाँ पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाता है, बूढ़ी काकी सब भुला कर बैठी हुई खाना खा रही थीं । उनके एक-एक रोएँ से सच्ची सदिच्छाएँ निकल रही थीं और रूपा बैठी इस स्वर्गीय दृश्य का आनंद लेने में निमग्न थी ।

शब्दार्थ

पुनरागमन वापस आना **आर्तनाद** दुःख भरी चीख **सब्जबाग** झूठे सपने **क्षुधावर्धक** भूख को बढ़ानेवाली **रक्षागार** सुरक्षित स्थान **दिक करना** हैरान करना **उद्विग्न** चिंतित **सदिच्छाएँ** शुभकामना, अच्छी इच्छा **सेतु** पुल **ग्रास** कौर **मंसूबे** कल्पनाएँ इच्छाएँ **रसास्वादन** स्वाद लेना, आनंद लेना

मुहावरा

सब्जबाग दिखाना अपना काम साधने के लिए बड़ी-बड़ी आशाएँ दिलाना ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) बूढ़ी काकी के भतीजे का क्या नाम था ?

(अ) धनीराम (ब) पं. बुद्धिराम (क) सुखराम (ड) दुःखराम

(2) रूपा किसकी पत्नी थी ?

(अ) धनीराम (ब) मनीराम (क) हनीराम (ड) पं. बुद्धिराम

(3) किसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ काकी के लिए बचाकर रखी थीं ?
(अ) रूपा (ब) बुद्धिराम (क) लाडली (ड) श्यामा
(4) बूढ़ी काकी को पत्तलों पर से जूठी पूड़ी के टुकड़े खाता देखकर कौन सन्न रह गया ?
(अ) रूपा (ब) बुद्धिराम (क) लाडली (ड) श्यामा

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :
(1) बूढ़ी काकी कैसे रोती थी ?
(2) बुद्धिराम के घर किस उत्सव में पूड़ियाँ बन रही थीं ?
(3) बूढ़ी काकी को कहाँ पर बैठा देखकर रूपा क्रोधित हो गई ?
(4) किस खुशी में लाडली को नींद आ रही थी ?
(5) उत्सव के दिन बूढ़ी काकी किसके डर से नहीं रो रही थी ?
(6) बुढ़ापे में बूढ़ी काकी की समस्त इच्छाओं का केन्द्र कौन-सी इन्द्रिय थी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :
(1) बूढ़ी काकी कब रोती थी ?
(2) लड़के बूढ़ी काकी को कैसे सताते थे ?
(3) बूढ़ी काकी की कल्पना में पूड़ियों की कैसी तसवीर नाचने लगी ?
(4) थाली में भोजन सजाकर बूढ़ी काकी को खिलाते समय रूपा ने क्या कहा ?
(5) बुद्धिराम ने बूढ़ी काकी की संपत्ति कैसे हथिया ली थी ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :
(1) क्या देखकर रूपा को पश्चाताप हुआ ? क्यों ?
(2) रूपा और बुद्धिराम ने बूढ़ी काकी के प्रति कब अमानुषिक व्यवहार किया और क्यों ?
(3) खाने के बारे में बूढ़ी काकी के मन में कैसे-कैसे मंसूबे बँधे ?
(4) 'बुढ़ापा तृष्णारोग का अंतिम समय है' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :
(1) बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है ।
(2) लड़कों का बूढ़ों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है ।

6. सूचनानुसार उत्तर लिखिए :
(1) **समानार्थी शब्द दीजिए :** दीनता, वाटिका
(2) **विरुद्धार्थी शब्द दीजिए :** प्रतिकूल, सज्जन, अनुराग, सुलभ, अपशकुन, दीर्घाहार, निर्लज्जता, अपरिमित
(3) **शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए :** जहाँ घटना बनी है वह जगह,
जीभ का स्वाद,
भूख से आतुर,
धीरज की परीक्षा लेनेवाली
(4) **मुहावरों के अर्थ बताकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :** सब्जबाग दिखाना, आपे से बाहर होना, उबल पड़ना, छाती पर सवार होना, नाक कटवाना, बेसिर पैर की बात, हृदय सन्न रह जाना, मुँह बाए फिरना, कलेजे में हूक-सी उठना, रोटियों के लाले पड़ना, आग हो जाना, जवाब दे चुकना, कलेजा पसीजना ।
(5) **संधि-विच्छेद कीजिए :** परमानंद, परमात्मा, अर्धांगिनी, स्वार्थानुकूलता, सहानुभूति, रसास्वादन, व्याकुल, दीर्घाहार, प्रतीक्षा, कण्ठावरुद्ध, क्षुधातुर, कालान्तर, रक्षागार सज्जन, सदिच्छाएँ, पुनरागमन, दुर्गति, सम्मुख
(6) **विग्रह करके समास का नाम लिखिए :** क्षुधातरु, सदिच्छाएँ, क्षुधावर्धक, रसास्वादन

योग्यता-विस्तार

- प्रेमचन्द की कहानी 'बड़े भाईसाहब' ढूँढकर पढ़िए ।
- प्रस्तुत कहानी का नाट्य रूपांतरण तैयार करके इसका मंचन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को वृद्धाश्रम की मुलाकात पर ले जाइए ।
- प्रेमचन्द की और कहानियाँ विद्यार्थियों को सुनाइए ।

●